



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (II)  
PART II—Section 3—Sub-section (II)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 484]

नई दिल्ली, बुधवार, अक्टूबर 23, 1980/कार्तिक 1, 1902

No. 484]

NEW DELHI, THURSDAY, OCTOBER 23, 1980/KARTIKA 1, 1902

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

आदेश

नई दिल्ली, 23 अक्टूबर, 1980

सं० का० आ० 853(अ) :—स्वर्ण (नियंत्रण) अधिनियम, 1969 (1968 का 45) की धारा 115 की उपधारा (1) के साथ पठित धारा 8 की उपधारा (6) और धारा 9 द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, मैं, एम० बी० एन० राव, प्रशासक, अपनी यह राय होने पर कि इसमें विनिर्दिष्ट मामलों के वर्ग की विशेष परिस्थितियों में ऐसा प्रपेक्षित है, भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग) के आदेश सं० का० आ० 623(अ), तारीख 16 अगस्त, 1980 का निम्नलिखित संशोधन करता हूँ, अर्थात् :—

उक्त आदेश में, परन्तुको के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :—

“परन्तु—

(क) ऐसे मामले में, जहाँ प्राप्तिकर्ता बैंक है, वह, यथास्थिति, प्रार्जन, प्रतिग्रहण या प्राप्ति की तारीख से सात कार्य-दिवस की अवधि के भीतर भारतीय रिजर्व बैंक को ऐसे स्वर्ण का विक्रय करेगा और भारतीय रिजर्व बैंक इस प्रकार विक्रीत स्वर्ण का अर्जन करने, प्रतिग्रहण करने या अन्यथा प्राप्त करने के लिए प्राधिकृत है ;

(ख) किसी अन्य मामले में, प्राप्तिकर्ता, यथास्थिति, प्रार्जन, प्रतिग्रहण या प्राप्ति की तारीख से छह मास की अवधि के भीतर

अनुज्ञात व्योहारी या प्रमाणित स्वर्णकार को उक्त स्वर्ण विक्रय करेगा अथवा उक्त स्वर्ण को किसी अनुज्ञात व्योहारी या प्रमाणित स्वर्णकार की मार्फत आधुषणों में संपरिवर्तित कराएगा :

परन्तु यह और कि पूर्ववर्ती परन्तुक के खण्ड (ख) के अन्तर्गत आने वाले मामले में, प्राप्तिकर्ता, ऐसे विक्रय या संपरिवर्तन की तारीख से तीन मास के भीतर निकटतम स्वर्ण नियंत्रण अधिकारी को अनुज्ञात व्योहारी या प्रमाणित स्वर्णकार से इस आशय का प्रमाणपत्र प्रस्तुत करेगा कि, यथास्थिति, ऐसे स्वर्ण का उसको विक्रय किया गया है या ऐसा स्वर्ण उसके द्वारा स्वर्ण आधुषणों में संपरिवर्तित किया गया है ।”

व्याख्याकरण—इस आदेश के प्रयोजनों के लिए, बैंक से निम्नलिखित अभिप्रेत है—

- (i) बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 5 के खण्ड (c) में यथापरिभाषित कोई बैंककारी कम्पनी ;
- (ii) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 (1934 का 2) की धारा 2 के खण्ड (ख) में यथा परिभाषित कोई सहकारी बैंक ;
- (iii) बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 51 के अधीन केन्द्रीय सरकार द्वारा आधुषुचित कोई बैंककारी संस्था ।

[सं०/80का०सं० 131/6/80-स्व०नि०-2 (भाग 3)]

एम० बी० एन० राव, स्वर्ण नियंत्रण प्रशासक

## MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

## ORDER

New Delhi, the 23rd October, 1980

**No. S.O. 853(E).**—In exercise of the powers conferred by sub-section (6) of section 8 and section 9, read with sub-section (1) of section 115, of the Gold (Control) Act, 1968 (45 of 1968), I, M.V.N. Rao, Administrator, being of the opinion that special circumstances of the class of cases specified herein so require, hereby make the following amendment in the order of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue) No. S.O. 623(E) dated the 16th August, 1980, namely :—

In the said Order, for the provisos, the following shall be substituted, namely :—

“Provided that—

- .) in a case where the recipient is a bank, it shall, within a period of seven working days from the date of the acquisition, acceptance or receipt, as the case may be, sell such gold to the Reserve Bank of India and the Reserve Bank of India is authorised to acquire, accept or otherwise receive the gold so sold ;

- (b) in any other case, the recipient shall, within a period of six months from the date of the acquisition, acceptance or receipt, as the case may be, either sell the said gold to a licensed dealer or certified goldsmith or get the said gold converted into ornaments through a licensed dealer or a certified goldsmith :

Provided further that in a case covered by clause (b) of the preceding proviso, the recipient shall, within three months of the date of such sale or conversion, furnish a certificate to the nearest Gold Control Officer from the licensed dealer or certified goldsmith to the effect that such gold has been sold to him or, as the case may be, such gold has been converted by him into gold ornaments.”

**Explanation.**—For the purposes of this Order, “bank” means—

- (i) a banking company as defined in clause (C) of section 5 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) ;
- (ii) a banking company as defined in clause (c) of section 2 of the Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934) ;
- (iii) any banking institution notified by the Central Government under section 51 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949).

[No. 80/F. No. 131/6/80-Gc, II(Pt. III)]

M. V. N. RAO, Gold Control Administrator